यशपालः रुचिरा

पारिवारिक पृष्ठभूमि

यशपाल का जन्म 3 दिसम्बर 1903 को फिरोजपुर (जहाँ के प्रसिद्ध अनाथालय मे इनकी माता श्रीमती प्रेमदेवी अध्यापिका थी) मे हुआ। इनके पिता हीरालाल कांगडा के पंचनद पहाडी इलाके के पहाडी खत्री और स्थाई निवासी थे। यशपाल जब नेशनल कालेज में पढते थे तभी उनके पिता का देहांत हो गया। (1) (देखिए, यशपाल, सिंहावलोकन, प्रथम भाग, पृष्ठ 123) कालान्तर मे प्रेमदेवी स्थाई रूप से कांगडा छोडकर पंजाब आकर रहने लगीं। उन्होंने अनेक कष्ट सहकर अपने पुत्रों यशपाल और धर्मपाल का पालन पोषण किया। यशपाल ने लिखा है-" हम दोनों को सफल और आदर्श बनाने के लिए मां कांगड़ा का पहाड़ी इलाका छोड़कर पंजाब की लूं से तपने वाले मैदानों में आर्य कन्या पाठशाला में नौकरी करके निर्वाह कर रही थी। इसी नौकरी से मां को कुछ उद्देश्य या परमार्थ के कर्तव्य की पूर्ति का भी संतोष होता था । " (2) (यशपाल, सिंहावलोकन, प्रथम भाग, पृष्ठ 57)

शिक्षा..यशपाल की मां उन्हें आर्य धर्म का प्रचारक बनाना चाहती थी अतः यशपाल ने गुरुकुल कांगड़ी के कठोर अनुशासन में साहित्य की शिक्षा प्राप्त की । गुरुकुल कांगड़ी में व्यक्त किए अपने जीवन के बारे में यशपाल ने लिखा है-" #### सख्त सर्दी में सूर्योदय से पहले ठंडे पानी में नहाना और भोजन के बाद अपना लोटा थाली स्वयं मांजना, इसके अलावा किसी दुकान या स्त्री का मुख ना देखना"(3) (यशपाल, सिंहावलोकन, प्रथम भाग, पृष्ठ 44) उन्होंने स्वीकार किया कि इस तरह के कठोर अनुशासन का वहाँ के छात्रों पर विपरीत प्रभाव पड़ा । (4) (देखिए, यशपाल, सिंहावलोकन, प्रथम भाग, पृष्ठ 50) बाद में उन्होंने अपने इस अनुभव को ' प्रायश्चित ' कहानी में लिपिबद्ध किया।

यशपाल ने लाहौर के डी. ए .वी स्कूल से हिंदी माध्यम में शिक्षा ग्रहण की तथा लाहौर में साइन बोर्डों से उर्दू का ज्ञान भी अर्जित किया। सन् 1919 में इन्होंने फिरोजपुर के सरकारी मिडिल स्कूल से प्रथम श्रेणी में मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात 1921 में मनोहर लाल मेमोरियल हाई स्कूल से मैट्रिक की और क्रांतिकारी गतिविधियों में भी सक्रिय रहे। सन् 1925 में नेशनल कॉलेज से बी.ए करने के उपरांत इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से प्रभाकर की परीक्षा उत्तीर्ण की। कुछ समय इन्होंने अध्यापन कार्य भी किया।

साहित्यिक योगदान..

(क) **उपन्यास :**

1. दादा कामरेड (1.5.1941)

2. देशद्रोही (म ई 1943)

3. दिव्या (म ई 1945)

4. पार्टी कामरेड (24.6.1946)

5. मनुष्य के रूप (मार्च 1949)

6. अमिता (1956)

7.(क) झूठा सच दो भाग (1958 , प्रथम भाग)

(ख) देश का भविष्य (1960 , दूसरा भाग)

8. बारह घंटे (1963)

9. अप्सरा का श्राप (1965)

10. मेरी क्यों फँसें (1968)

11. मेरी तेरी उसकी बात (1974)

(ख) **कहानी संग्रह :**

1.पिंजरे की उड़ान (1939)

2. वो दुनिया (1942)

3. ज्ञानदान (1943)

4. अभिशप्त (1944)

5. तर्क का तूफान (1944)

6. भस्मावृत्त चिनगारी (1946)

7. फूलो का कुर्ता (1949)

8 धर्मयुद्ध (1950)

9. उत्तराधिकारी (1951)

10. चित्र का शीर्षक (1951)

11.तुमने क्यों कहा था मैं सुंदर हूँ (1954)

12.उत्तमी की माँ (1955)

13.ओ भैरवी (1958)

14. सच बोलने की भूल (1962)

15. खच्चर और आदमी (1965)

16. भूख के तीन दिन (1968)

17 लैंप शेड (1976)

विशेष वैविध्य की दृष्टि से इनकी कहानियों को निम्न वर्गों में विभक्त करके देखा जा सकता है :--

1.) सीमित परिवेश को समेटे कहानियां --(आदमी का बच्चा , कर्मफल , अभिशप्त , संयासी , इत्यादि)

2) सेक्स या रागात्मक कहानियां -- (तीसरी चिंता , औरत , दर्पण , पराई , छलिया , नारी , निर्वासित , भैरवी इत्यादि)

3) धार्मिक अंधविश्वास और परम्परागत रुढिवादी मान्यताओं संबंधी कहानियां-- (कुल मर्यादा , मनु की लगाम , उत्तमी की मां , चौरासी लाख योनि , परलोक इत्यादि)

4) आतंकवाद से प्रभावित कहानियां-- (अंग्रेज का घुंघरू , कल , आदमी , जनसेवक , साग , इस टोपी को सलाम , कम्युनिस्ट इत्यादि)

5) साहित्य और कला से संबंधित कहानियां --(भस्मावृत्त चिंगारी , नीरस रसिक , कला का शीषक इत्यादि)

(ग) **निबंध.**

1.न्याय का संघर्ष (1940)

2. मार्क्सवाद (1941)

3. गांधीवाद की शवपरीक्षा (19 42)

4. चक्कर क्लब (1943)

5. बात बात में बात (1944

6. रामराज्य की कथा (1950)

7. देखा, सोचा , समझा (1951)

8. बीवी जी कहती हैं मेरा चेहरा रोबीला है (1961)

9. जग का मुजरा (1962)

(घ) **एकांकी..**

1. नशे नशे की बात (1952)

2. रूप की परख (1952)

3. गुडबाय दर्द-ए-दिल (1952)

(च) **अनुवाद .**

1. पक्का कदम (1949) (बनर्दी केर्वासयेब ने ' डिसाइसिव स्टेप ' शीर्षक उपन्यास में रूसी क्रांति की पृष्ठभूमि पर तुर्कमानिस्तान के मुक्ति संघर्ष की कथा अंकित सन् 1949 में यशपाल ने इसका अनुवाद 'पक्का कदम' उपन्यास के रूप में किया।

2. चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (चीन के लेखक शाओ ची लीड की कृति का अनुवाद जिसमें चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के स्वरूप और कार्यों का उद्घाटन है)

3. जनानी ड्योढ़ी (1955) (अंग्रेजी रचनाकार पर्लबक के उपन्यास ' पैवेलियन आंफ वुमन' का अनुवाद)

4. फसल (1956) (गलिन निकोल के उपन्यास 'हार्वेस्ट' का अनुवाद)

5.छलनी मे अमृत (1957) (कमला मार्कण्डेय के उपन्यास 'नेक्टर इन सीव' का अनुवाद)

6. जुलेखा (1960) (उर्दू लेखक अस्कद मुख्तार के उपन्यास ' जुलेखा ' का अनुवाद)

(छ) **सम्पादन**..

यशपाल ने विप्लव , रक्ताभ , नया पथ तथा उत्कर्षनामक पत्रिकाओं का संपादन कार्य किया।

1 विप्लव (प्रवेशांक सन 19 39) समाज में व्याप्त बुराइयों का अंत कर क्रांति की चेतना को जागृत करना इस पत्रिका का उद्देश्य था।

2.रक्ताभ - नवंबर 1947 से सितंबर सन 1948 तक यशपाल इस पत्रिका के संपादक मंडल में थे। इस पत्रिका का भी मुख्य उद्देश्य लोगों में क्रांति जागृत करना था।

3. नया पथ - यह वामपंथीय पत्रिका थी। इस मेंप्रगतिशील विचारों को अभिव्यक्ति मिलती थी।

4. उत्कर्ष - विशुद्ध साहित्य पत्रिका थी जिसमें सन् 19 60 के बाद की हिंदी कहानियों पर विशेषांक निकाला जाता था

(ज) **पत्र** ..

यशपाल अपने मित्रों और निकट संबंधियों से पत्रों के माध्यम से जुड़े रहते थे। इनके पत्रों का संपादन इनके प्रिय मित्र मधुरेश ने अपनी पुस्तक ' यशपाल के पत्र ' में किया है

(झ) **आत्मकथा** ..

इन की आत्मकथा सिंहावलोकन तीन भागों में प्रकाशित है। इनकी मृत्यु के कारण चौथा भाग अपूर्ण है।

(क) सिंहावलोकन प्रथम भाग (1951)- यशपाल के कांग्रेस के असहयोग आंदोलन में सक्रिय भागीदारी , क्रांतिकारियों से संपर्क , नेशनल कॉलेज में क्रांतिकारियों के साथ के अपने संबंधों को लिपिबद्ध किया है।

(ख) सिंहावलोकन दूसरा भाग (1952) इसमें लेखक ने बम बनाने की योजना , बम फैक्ट्री , वायसराय की गाड़ी को उड़ाने , भगवती भाई के शहादत और स्वयं को दिए गए प्राणदंड के निर्णय का उल्लेख किया है।

(ग) सिंहावलोकन तीसरा भाग (1955) इसमें दल की रक्षा हेतु आजादी के प्रयत्न ; भगत सिंह , राजगुरु, सुखदेव की शहादत ; संगठन को पुनः बनाने का प्रयत्न ; जेल में पुलिस से संबंध ; जेल में विवाह व रिहाई के समय आई अड़चनों का उल्लेख मिलता है।

(ट) **यात्रा साहित्य...**

1.लोहे की दीवार के दोनों ओर

सन् 1952 मे वियना में विश्व शांति कांग्रेस का आयोजन हुआ जिसमें यशपाल ने भी सक्रिय भागीदारी की । उन्होंने स्विजरलैंड , ऑस्ट्रेलिया , रूस , जाजिया और इंग्लैंड की यात्राएं की जिनके अनुभवों को उन्होंने इसमें लिखा है।

2. राह बीती

1956 में चेकोस्लाविया की राजधानी प्राग में लेखक कांग्रेस का आयोजन हुआ। यशपाल ने भारत की ओर से इस में भागीदारी की। उन्होंने चेकोस्लाविया , इटली और जर्मनी में की गई अपनी यात्राओं को इसमें लिपिबद्ध किया है।

3. स्वर्गोद्यान बिना सांप

सन् 1973 में मॉरीशस के प्रधानमंत्री के आमंत्रण पर यशपाल ने अपनी अंतिम विदेश यात्रा की। इस पुस्तक में उन्होंने मॉरिशस जैसे बहु जातीय और बहुभाषी देश की समस्याओं पर अपने विचार अभिव्यक्त किए हैं।

पुरस्कार एवं सम्मान..

1). सन् 1955, मार्च मे देव पुरस्कार (कहानी संग्रह ' चित्र का शीर्षक ' के लिए ; श्री कस्तूरी सरना संतानस, उप राज्यपाल विन्ध्य प्रदेश द्वारा ₹21 सौ की धनराशि प्रदान की)

2). 30 मार्च 1956 ; साहित्यकार परिषद पेप्सू पटियाला सम्मान पत्र (कलाकृतियों की उत्कृष्ट सेवा हेतू)

3) 30 मार्च 1956 ; अभिनन्दन ग्रन्थ सम्मान पत्र (हिन्दी की उत्कृष्ट सेवा हेतू)

4). 7 दिसंबर 1963 ; यशपाल अभिनन्दन समिति दिल्ली सम्मान पत्र (दिल्ली साहित्यकारो की ओर से षष्टिपूर्ति के अवसर पर)

5.) 10 दिसंबर 1963 ; साहित्य संसद पंजाब सम्मान पत्र, (साहित्य संसद पंजाब की ओर से पटियाला मे दिया गया)

6.) 23 नवम्बर 1964 ; उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन ; इलाहाबाद सम्मान पत्र ; (भगवती चरण वर्मा की अध्यक्षता में, प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री द्वारा , कथासाहित्य की विशेष सेवा हेतू)

7.) वि.सं.2022, मंगलाप्रसाद पुरस्कार ; (रचना झूठा सच के लिए , हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से , श्री कमलापति त्रिपाठी द्वारा प्रदत्त)

8). सन् 1967, साहित्य वारिधि उपाधि ; (उत्तर प्रदेश हिन्दी सम्मेलन प्रयाग द्वारा दिया गया)

9). सन् 1968 , विगत हिन्दी साहित्य संगम सम्मान पत्र ; (मानवता सेवा के लिए ; संगम के मंत्री श्री पीयूष गुलेरी द्वारा दिया गया)

10.) 14 नवम्बर 1969 ; सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार ; भारत और सोवियत देश के मध्य शांति स्थापित करने के लिए ; दिल्ली के उपराष्ट्रपति द्वारा दिया गया)

11). अप्रैल 1970 ; पद्मभूषण ; (यशपाल के व्यक्तिगत गुणों के लिए ; तत्कालीन राष्ट्रपति द्वारा दिया गया)

12) 1 4 अगस्त 1972 ; को ताम्र पत्र ; (स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका के निभाने के लिए भारत सरकार की ओर से इंदिरा गांधी द्वारा दिया गया)

13). जनवरी 1973 में साहित्य संघ मॉरीशस के मासिक प्रकाशन पर 'आभा' की ओर से यशपाल को सम्मान पत्र

14). सन 1975 में डी लिट् की उपाधि (उत्तर प्रदेश के राज्यपाल द्वारा ; आगरा विश्वविद्यालय में साहित्य के सम्मान के लिए दी गई)

15). 19 मई सन 1975 ; ताम्र पत्र , (श्यामसुंदर दास की जन्मशती के विशेष अवसर पर हिंदी भाषा साहित्य के क्षेत्र में विशेष सेवा के लिए काशी नारायणी प्रचारिणी सभा द्वारा दिया गया)

16.) दिसंबर सन 1975 ; साहित्य वाचस्पति ; (हिंदी साहित्य की विशेष सेवा के लिए ; हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा अलंकृत किया गया)

मृत्यु..

जीवन के 73 वर्षों तक साहित्य साधना और क्रांतिकारी कार्यों में संलग्न रहने के उपरांत 26 दिसंबर 1976 को लखनऊ में यशपाल का पार्थिव शरीर पंचतत्वों में विलीन हो गया।